को देख ईर्ष्यालु नहीं होती और न ही उसे कोसती है, वह तो प्रकृति के प्रति सहानुभूति व्यक्त करती हुई कहती है।

सींचे ही बस मालिनें, कलश लें, कोई न ले कतरी !
शाखी फूलें फलें यथेच्छ बढ़के फैलें लताएं हरी !!

उर्मिला नारी के मूल गुण धर्म 'अन्य के दुःख की सहभागिनी' बनना चाहती है। इस कारण वेदना भी उर्मिला को भली लगती है। उर्मिला का विरह निरन्तर परिष्कार पाता जाता है और अन्त में वह विरह के अभिशाप को भी वरदान मान बैठती है, वह कहती है–

सिर माथे तेरा यह दान, हे मेरे प्रेरक भगवान !
दहन दिया तो भला सहन क्या तुझे अदेय !
प्रभु की ही इच्छा पूर हो, जिसमें सबका क्षेय,
यही रूदन है मेरा गान, हे मेरे प्रेरक भगवान !!

उर्मिला की यही भावना नारी के उच्चादर्शों की विभूति है। जो 'अवधि शिला का गुरूभार, हृदय पर रखे हुये से जलधार' तिल तिल समय को काट रही है। विरह की विदग्धता से उर्मिला का चरित्र कंचन हो जाता है। उसकी उदात्त भावनाओं के कारण वह नारी समाज की सहानुभूति और प्रेमभाव को जागृत करने वाली प्रतिनिधि नारी बन जाती है। डा० नगेन्द्र ने तो उर्मिला मानवता का साक्षात प्रतिबिम्ब माना है। उर्मिला का लक्ष्मण के प्रति एकाकी प्रेमालाप भारतीय कुल दाम्पत्य जीवन की सुन्दर झाँकी है। साकेत की उर्मिला में गुप्त जी को नारी के उच्चादर्श दिखाई देते है।

यही नारी के उच्चादर्श उनकी एक अन्य कृति 'यशोधरा' में भी परिलक्षित होते है। यशोधरा गौतम गौतम बुद्ध की सहधर्मिणी है. सिद्धार्थ के यशोधरा को उसके पुत्र के साथ सोते छोड़कर संन्यास हेतु जाने की घटना के बाद यशोधरा का चरित्र उजागर होता है। यशोधरा भी उर्मिला की भांति विरह वेदना में जलती है। यहां यह भी कहना आवश्यक है कि यशोधरा के नारी सम्बन्धी तीन रूप परिलक्षित होते है। जिनमें प्रथम वह सच्चे अर्थों में पति की अनुगामिनी है वह पति की साधना में सहायक बनना चाहती है कण्टक नहीं। पति के चुपचाप चले जाने को वह अपनी अयोग्यता मानती है। वह समझती है कि उसके पति उसे योग साधना के मार्ग में बाधक मानते है। इसके बाद भी वह पत्नी धर्म का अकेले रहकर निर्वाह करती है।

अपने पति गौतम बुद्ध की साधनावस्था में बाल कटवाने की बात सुनकर यशोधरा भी अपने बाल कटवा लेती है और साध्वी रूप से जीवन निर्वाह करने लगती है अपने प्रिय की कुशल क्षेम की चिन्ता यशोधरा को सदैव रहती है वह कहती है–

मेरे फूल, रहो तुम फूले !
तुम्हे झुलाता रहे समीरण, झोंके देकर झूले !
तुम उदार दानी हो, घर की दशा सहज ही भूले,
क्षमा कभी यह ऋणपाणि भी भूल तुम्हे यदि छूले !

यह गुप्त जी की नारी का त्याग है। पति की धरोहर रूप में गौतम बुद्ध का पुत्र राहुल यशोधरा के पास ही है यशोधरा अपने पुत्र की परवरिश बहुत अच्छे ढंग से करती है। वह उसे पिता की कमी नही खलने देती है, साथ ही साथ यशोधरा राहुल को पिता के उच्चादर्शों की सीख भी देती रहती है। यशोधरा का एक अन्य रूप कुलवधू की मर्यादा का भी है। राजभवन में रहकर उसकी मर्यादा का पूरा ध्यान यशोधरा को है।

वह अपने सास ससुर और अन्य सगे सम्बन्धियों के लिए भी पर्याप्त सजग है। पति की साधना में बाधा न बनना यशोधरा का नारी उच्चादर्श है। इसी आदर्श के कारण गौतम बुद्ध साधना के उपरान्त स्वयं यशोधरा के पास आते है। वह बुद्ध से मिलने नही जाती। यशोधरा का स्वाभिमान, सहनशीलता, धर्म, सत्य और कर्त्तव्यपरायणता तथा त्याग गुप्त जी के नारी के प्रति विचार को स्पष्ट करते हैं।

इसके अतिरिक्त मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य में कैकेयी के माध्यम से कलंक को प्रक्षालित करते हुये निखरता हुआ पुत्र के प्रति समर्पित वात्सल्य रूप, विष्णुप्रिया के द्वारा अपने चैतन्यपति की घोर उपेक्षा को सहते हुये अचेत समाधि सा रूप, माण्डवी श्रुतिकीर्ति का पति के प्रति प्रेम की अगाधता का रूप एवं राक्षसी समझे जाने वाली हिडिम्बा का शाश्वत स्त्री रूप का चित्रांकन करके नारी के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया है। असहाय नारी जहां एक ओर अपने को अबला कहती है। वहीं पुरूष नारी के दया की मूर्ति कहकर नारी की सार्थकता सिद्ध करता है। मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में गौतम बुद्ध कहते है-

दीन न हो गोपे, सुनो हीन नही नारी कभी,
भूत दया मूर्ति वह मन से शरीर से,
क्षीण हुआ वन में क्षुधा से मैं विशेष जब,
मुझको बचाया मातृ जाति ने ही खीर से !
आया जब मार मुझे मारने को बार बार,
अप्सरा अनीकनी सजाये हेम-हीर से !
तुम तो यहां भी, धीर ध्यान ही तुम्हारा वहाँ,
जूझा मुझे पीछे कर पंचशर वीर से !

(डॉ० यशोधरा कुमारी तिवारी (विद्या))